



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

13%



Overall Similarity

Date: Dec 6, 2023

Matches: 184 / 1446 words

Sources: 2

Remarks: Moderate similarity detected, consider enhancing the document if necessary.

Verify Report:

Scan this QR Code



मैनपुरी

जनपद

(

उ

.

पर

.)

में

भूगर्भ

जल

स्तर

में

गरिवट

-

भौगोलिक

अध्ययन

डा

.

सौरभ

शाक्य
अससिटेट

पूरोफेसर
(
भूगोल

वभाग

)

जे

.

एस

.

वशिवदियालय

,

शकियोहाबाद

शोध

सारांशः

पूरस्तुत

शोध

पुत्र

में

उ

.

पर

.

में

मैनपुरी

जनपद

में

भूमिगत

जल

संसाधन

का

भौगोलिक

अध्ययन

किया

गया

है

,

सीमति

वर्षा

एवं

जल

का

अत्यधिक

उपयोग

भूमिगत

जल

का

लगातार

गरिना

एक

चन्तिता

का

वषिय

है

जल

प्रकृति

की

अनमोल

धरोहर

है।

यदि

जल

को

इसी

तरह

,

हम

व्यर्थ

बहाते

रहे

तो

आने

वाले

समय

में

पानी

की

कमी

का

एक

बृहत

संकट

खड़ा

ही

जाएगा

।

इस

आपदा

से

बचने

के

लिए

सही

तरीके

से

जल

के

उपयोग

एवं

अत्यधिक

जल

संरक्षण

करना

अति

आवश्यक

है।

भौगोलिक

परिचय:

अध्ययन क्षेत्र उत्तर-प्रदेश के आगरा मण्डल का उत्तर-पूर्वी जिला मैनपुरी है। जनपद का अक्षांशीय वस्तितार 26° 53' उत्तर से 27° 31' उत्तर तथा देशांतरीय वस्तितार 78° 20' पूर्व से 79° 26' पूर्व के मध्य है। मैनपुरी जनपद गंगा-यमुना का दोआब क्षेत्र है यहां पर काली, अरनिंद, सरिसा, सेंगर तथा ईशन आदि नदियां अपवाह क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जनपद का कुल क्षेत्र. 2145 वर्ग किलोमी. है जनपद में 6 तहसील क्रमशः मैनपुरी, कुरावली, भोगांव, कशिनी, करहल तथा घरीर हैं। जनपद में 2011 की जनगणना के अनुसार 1847194 व्यक्ति हैं। जनघनत्व 669 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमी. है। तथा साक्षरता 78.26 है।

उद्देश्य:

1 अध्ययन

क्षेत्र

में

भू

.

जल

संसाधनों

की

वास्तविक

स्थिति

का

आंकलन

करना

2

भू

जल

समस्याओं

की

जानकारी

प्रदान

करना

3

जल

संकट

के

कारण

एवं

प्रभाव

4

जल

संरक्षण

के

लिए

जन

जागरुकता

अभयान

चलाना

वधितंत्र

-

जल

संसाधन

के

अध्ययन

के

लए

प्राथमिक

व

द्वितीयक

ओकड़ों

का

प्रयोग

किया

गया

है

प्राथमिक

ओकड़ों

का

संग्रह

व्यक्तिगत

साक्षात्कार

एवं

द्वितीयक

आंकड़ों

का

संग्रह

सरकारी

वभागों

,

अभिलिखों

तथा

इण्टरनेट

के

माध्यम

से

कयिा

गयल

है।

डूरसूतलवनल

खल

केवल

डलनव

खलतल

के

लएल

ही

नहीं

बलकुल

खीव

जन्तुओं

और

पेड़

-

पौधों

के

लिए

भी

आवश्यक

है

,

पृथ्वी

15

पर

जल

के

बना

जीने

की

कल्पना

नहीं

की

जा

सकती

है

समस्त

जीव

जगत

का

आधार

ही

जल

है

,

हमारे

शरीर

के

अन्दर

चलने

वाली

समस्त

जैवरासायनिक

प्रक्रियाएँ

तो

जल

के

अभाव

में

पूरण

रूप

से

कक

ही

जाएंगी

यदि

हम

जलू

ग्रहण

करना

बंद

कर

दें

तो

क्या

हमने

और

आपने

कभी

सोचा

था

कि

पानी

एक

दनि

बोतलों

में

वर्केंगा।

आज

जल

की

कभी

देशों

के

लिए

और

महाद्वीपों

के

दायरे

के

तोड़कर

वशिव्यापी

समस्या

वन

गई

है

.

भू

जल

1 एक

अति

महत्वपूर्ण

प्राकृतिक

संसाधन

है

यह

प्रकृति

की

ओर

से

दिया

गया

उपहार

है।

भारत

का

2/3

भाग

पानी

से

घरिा

है

,
लेकनि

इस

2

से

उप्रतशित

ही

पीने

के

आज

भारत

सहति

वशिव

के

अनेक

देश

,

पानी

की

कमी

की

समस्या

लायक

है

से

जूझ

रहे

हैं

,

भारत

जैसे

वशाल

देश

में

जहाँ

175%

आबादी

है

वहाँ

पीने

योग्य

पानी

केवल

4%

ही

है

प्रत्येक

वर्ष

22

मार्च

को

वर्ष

जल

द्वि

मनाया

जाता

है

जल

के

महत्व

को

समझने

के

लिए

ही

UNO

ने

वर्ष

2013

को

,

वर्ष

जल

वर्ष

के

रूप

में

मनाया

था।

अन्तरराष्ट्रीय

जल

प्रबंधन

संस्थान

कोलंबो

कोलम्बो

सहति

अनेक

राष्ट्रीय

व

अन्तरराष्ट्रीय

एजेंशियों

का

ऐसा

अनुमान

है

की

भवषिय

में

जल

की

कमी

स्कू

पड़ी

समस्या

होगा

जो

मानव

सहति

अन्य

जीव

जन्तुओं

पेड़

पौधों

के

जीवन

पर

एक

नकारात्मक

प्रभाव

डालेगी।

भू-जल संकट:

,

दक्षिण

अफ्रीका

में

केपटाउन

जल

संकट

पश्चिमी

केच

शेत

में

पानी

की

गम्भीर

कमी

का

दौर

था

जसिने

वशिष

से

रूप

केपटाउन

शहर

को

प्रभावति

कयि।

केपटाउन

जल

संकट

2017

के

मध्य

से

208

के

मध्य

चरम

पर

था

जल

संकट

वाले

वर्ष

की

२०

शहरों

में

14

भारतीय

शहर

शहरों

की

सूची

2000-2019

में

जारी

की

गई

थी

भारत

का

छठा

सबसे

बड़ा

शूख्य

2 चेन्नई

वर्तमान

में

भारी

जल

संकट

से

जूझ

रहा

चेन्ई

जल

संकट

यह

सपष्ट

करता

है

यदि

आपका

शहर

,

वाक

बाद

से

प्रभावति

होता

है

तो

यह

कएि

बलिकुल

भी

आवश्यक

नहीं

है

,

कि

शेत

जल

संकट

से

प्रभावति

नहीं

हो

सकता।

क्योंकि

कुछ

ही

वर्षों

पहले

चेन्नई

ने

वनिशकारी

बाद

का

संकट

का

सामना

कथिा

था

जसिके

कारण

कई

लेगों

की

मृत्यु

हुयी

थी

तथा

लगभग

18

मलियिन

लोग

वसि्थापति

थे

|

वशिषज्जों

का

मानना

का

चेन्ई

का

यह

जल

संकट

चीते

वर्ष

साउथ

अफ्रीका

की

राजधानी

केपटाउन

से

भी

अधिक

भयानक

ज्जातव्य

है

कि

केपटाउन

के

जल

संकट

में

जलाशयों

का

स्तर

काफी

नीचे

चला

गया

था।

और

इस

स्थिति

से

नपिटने

के

लिए

सरकार

को

आपातकालीन

सुरक्षा

उपाए

अपनाने

पड़े

थे।

परन्तु

चेन्ई

की

यह

स्थिति

आश्चर्यचकति

करने

वाली

नहीं

है

क्योंकि

जब

वर्ष
2018
में

जल

संकर

के

उच्च

स्तर

का

सामना

कर

रहे

वशिव

के

400

महानगरा

का

मूल्यांकन

कथिा

गया

तब

चेन्ई

का

उस

सूची

में

प्रथम

स्थान

था

इस

सूची

में

कोलकाता

,

मुम्बई

,

तथा

दिल्ली

शहर

भी

हैं।

भू-

जल

स्तर

में गरीबों के प्रमुख कारण-

घटता

भूमिगत

जल

स्तर

हम

सबके

लिए

एक

चिन्ता

का

वषिय

है

पछिले

कई

दशकों

से

उद्योगों

येती

नही

वकिस

कार्यों

व

अन्य

उपयोगो

मे

भूगर्भीय

जल

पर

हमारी

नरिभरता

बढ़ती

1 जा

रही

है

इस

कारण

भूमगित

जल

के

अन्धाधुंध

दोहन

से

भू

जल

स्तर

नरितर

तेजी

से

घटता

जा

रहा।

प्रबंधन

में

कवयिों

के

कारण

2030

तक

दुनियां

को

जल

संकट

का

सामना

करना

पड़

सकता

है।

हमारे

देश

में

अधिकांश

फसले

घर

जल

के

भरोसे

होती

है

वर्तमान

में

बढ़ते

शहरीकरण

,

औद्योगिकीकरण

आधुनिकीकरण

,

कृषि

गशीनीकरण

और

वैज्ञानिकी

प्रगति

की

वजह

से

भू

जल

पर

दबाव

बढ़ता

जा

रहा

है।

दूसरी

तरफ

ग्लेवलि

,

वार्मगि

बढ़ने

से

मृदा

सतह

से

वाष्पन

व

पौधों

में

वाष्पोत्सर्जन

दर

में

प्रादर्भ

होती

है

जसिके

परणाम

स्वरुप

भूमि

में

नमी

की

कमी

होने

से

भू

जल

स्तर

में

गरिवट

देखी

जा

रही

है।

देश

के

अनेक

भागों

में

शहर

से

लेकर

गांव

तक

कंक्रीट

की

सड़कें

"

होती

जा

रही

है

जो

वरसात

के

पानी

को

जमीन

के

अन्दर

जाने

से

रोकती

हैं

जसि

कारण

वरुषल

डहकर

नषुऑ

अथवल

वलषुडुडुत

हु

ऑलतल

है।

कल

डलनी

इधर

-

उधर

कुषुतुर

डु

भूमिगत

जल

स्तर

में

कमी

कमी

का

प्रमुख

सहान

कारण

कृषि

है।

बरनाहल

विकासखण्ड

में

3

फसल

की

जाती

है

जनिमें

मक्का

,

थान

,

तथा

आलू

सर्वप्रमुख

है।

थरौर

,

मैनपुरी

,

तथा

करहल

वकिसयण

में

धान

की

फमल

को

परमुखता

परदान

की

जाती

है

वर्षा

में

कमी

होने

से

भूमिगत

जल

का

उपयोग

अत्यधिक

किया

जाता

है।

जसिकी

वजह

से

भूमगित

जल

दनि

-

पूरतदिनि

10

गरिता

जा

रहा

है

भूमगित

जल

स्तर

में

गरिवट

मानव

,

फे

प्रयोग

की

जाने

वाली

घरेलू

सवमर्सविल

द्वारा

भी

जम्मेदार

हूँ

हम

देखते

हैं

कहि

लोग

अपने

घरों

को

धुलने

,

भैस

को

बहलाने

तथा

अपनी

गाड़ियों

को

धुलने

में

अत्यधिक

पानी

बर्बाद

करते

हैं।

क्योंकि

एक

गाड़ी

को

धुलने

में

वो

घंटों

पानी

फैलाते

है

जसिसे

घंटो

तक

स

|

मर्सबिल

चलते

रहते

हैं

,

जसिसे

जरूरत

से

अधिक

पानी

बर्बाद

हो

जाता

है।

भू-जल संरक्षण

अध्ययन

क्षेत्र

में

भूमिगत

जलस्तर

में

कमी

का

परमुख

कारण

जल

संरक्षण

तकनीकों

का

अभाव

है।

यदि

जलसंरक्षण

तकनीकों

को

गांव

से

लेकर

शहर

तक

सही

से

लागू

करवाया

जाता

तो

आज

ये

स्थिति

न

होती।

भूमिगत

जल

स्तर

में

कमी

को

दूर

करने

के

लिए

बड़ी

-

बड़ी

छतो

के

वर्षा

के

पानी

को

वोरखेल

के

माध्यम

से

भूगर्भ

में

भेजना

चाहएि

जसिसे

जल

अधकि

से

अधकि

भूमकि

अन्दर

इकट्ठा

हो

सके

एवं

हर

गांव

के

आस

-

पास

तालाब

खुदवाना

चाहिए

जसिमें

गांव

की

छतों

का

पानी

उस

तालाब

में

जाना

चाहिए।

ये

एक

ऐसी

वधि

है

जसिमें

हमें

अधिक

धन

खर्च

करने

की

जरूरत

नहीं

हैं

,

बल्कि

1 जल

को

संरक्षति

करने

के

लिए

अधिक

जागरुकता

की

आवश्यकता

है।

हम

प्रत्येक

गांव

में

प्रत्येक

ग्रामवासी

को

बता

सकते

हैं

तथा

सरकार

से

वीरवेल

के

माध्यम

से

से

खर्चे

के

लिए

अनुदान

की

मांग

कर

सकते

हैं

जसिसे

परत्येक

घर

का

पानी

या

तो

बोरवेल

के

माध्यम

से

जमीन

के

अन्दर

जाएगा

या

जहां

तालाब

है

वहां

के

तालाब

में

जाना

चाहिए

जसिसे

तालाब

का

पानी

जमीन

के

अन्दर

जा

सके

लेकनि

तालाब

का

अधिकतम

पानी

जमीन

के

अन्दर

न

जाकर

वाष्पीकृत

हो

जाता

है

।

जात

:

हमें

पुराने

चोखेल

जो

कसीं

कारण

से

बन्द

पड़े

हैं

उनमें

वर्षा

का

पानी

जमीन

के

अन्दर

भेजना

चाहिए।

जसिसे

भूमगित

जलस्तर

में

वृद्धि

हो

सके।

और

ये

वर्षा

का

जल

शुद्धता

में

खरा

उतरेगा।

नषिकर्षः

यदजिल को हम इसी तरह व्यर्थ बहाते रहे तो आने वाले समय में पानी की कमी का गहन संकट खडा हो जाएगा।

संदर्भ

सूची

शम

वी

.

एल

.

कार्ष

भूगोलू

"

|

डा

.

गावटी

पर्यावरण

भूगोल

, (DN)

डा

.

मोगोरथिा

एवं

डा

.

जोशी

पर्यावरण

अध्ययन

(iv)

दवा

.

झवन्दिदर

सहि

पर्यावरण

भूगोल

Sources

- [1](https://hindi.indiawaterportal.org/articles/ghataataa-bhauujala-satara-kaarana-aura-naivaarana) <https://hindi.indiawaterportal.org/articles/ghataataa-bhauujala-satara-kaarana-aura-naivaarana>
INTERNET
7%

 - [2](https://www.drishtias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/20-water-vulnerable-megacities) <https://www.drishtias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/20-water-vulnerable-megacities>
INTERNET
6%
-

EXCLUDE CUSTOM MATCHES OFF

EXCLUDE QUOTES ON

EXCLUDE BIBLIOGRAPHY ON